संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : अप्रैल (द्वितीय)

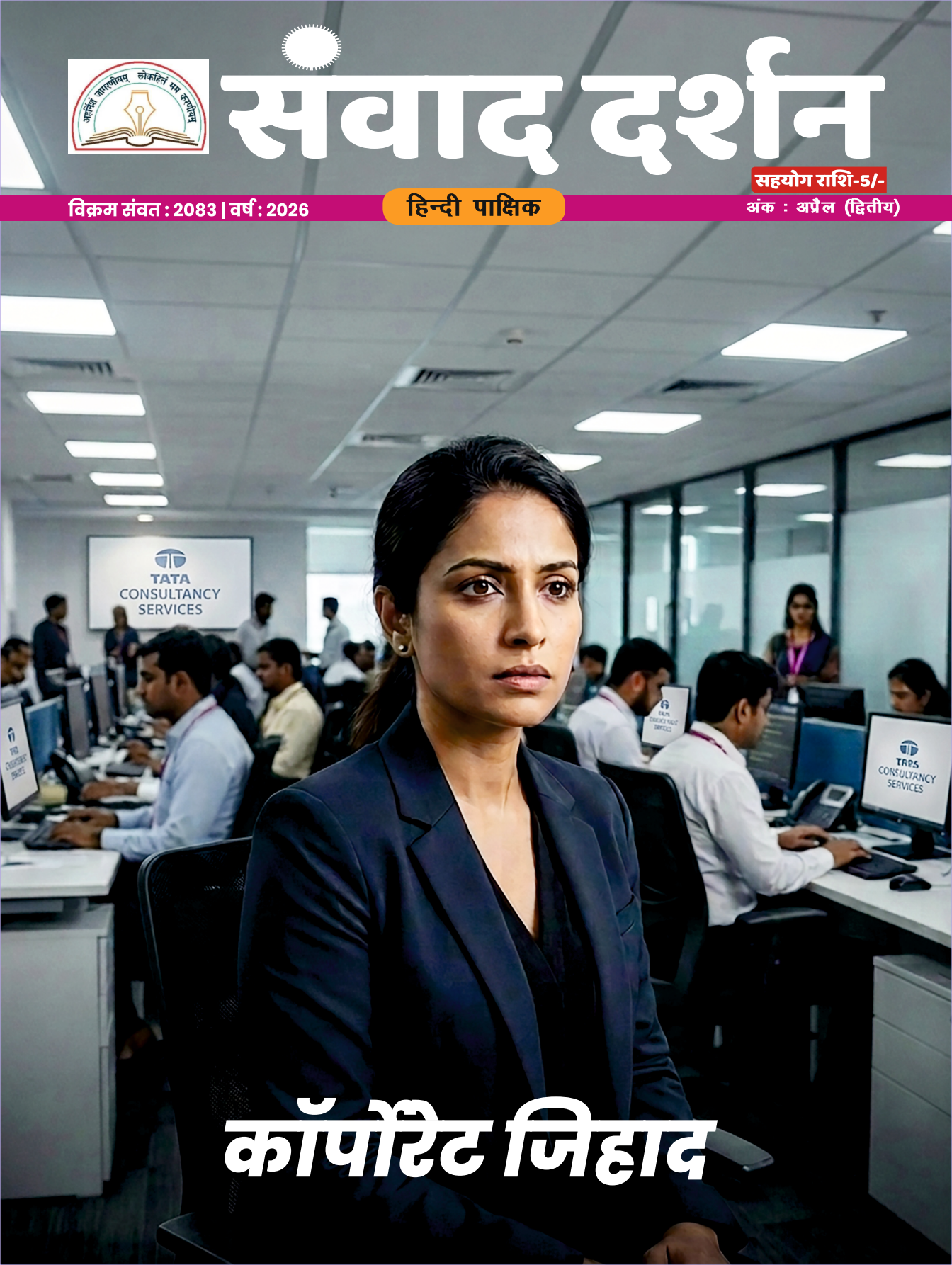

कॉर्पोरेट जिहाद

3 फीट लंबा और 15 किलो का कद्दू!, जैविक खेती का कमाल

झारखंड के गुमला जिले की महिला किसान एमेलदा कुजूर ने जैविक खेती के जरिए आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। पलायन और बेरोजगारी की चुनौती के बीच उन्होंने अपनी मेहनत और पारंपरिक ज्ञान के दम पर खेती को ही आजीविका का मजबूत साधन बनाया। उसने खेत में 3 फीट लंबे और 15 किलो तक वजन वाले देसी कद्दू उगाकर सबको चौंका दिया हैं। गोबर खाद और देसी बीजों से की गई उनकी खेती न केवल बेहतर उत्पादन दे रही है, बल्कि क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा बन रही है।

झारखंड का गुमला जिला अपनी प्राकृतिक सुंदरता और कृषि प्रधान संस्कृति के लिए जाना जाता है, लेकिन यहां की 95 प्रतिशत ग्रामीण आबादी के सामने रोजगार और पलायन हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है।

ऐसे में गुमला शहर के खड़िया पाड़ा की रहने वाली महिला किसान एमेलदा कुजूर ने आधुनिक युग की बेरोजगारी को मात देते हुए खेती के जरिए स्वावलंबन की एक नई गाथा लिखी है।

एमेलदा न केवल अपने परिवार को आर्थिक रूप से सबल बना रही हैं, बल्कि अपनी मेहनत से उपजाई गई फसलों के कारण पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। उनके बाड़ी (खेत) कद्दू आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

इंटर तक शिक्षित एमेलदा बताती हैं कि खेती–बाड़ी का हुनर उन्हें विरासत में अपने पिता से मिला है। शादी के बाद लगभग 10–12 वर्षों से वे गुमला में रहकर सब्जी उत्पादन और बकरी पालन कर रही हैं। वर्तमान में उन्होंने लगभग 30 डिसमिल जमीन पर प्याज, लहसुन, सेंबी और कद्दू जैसी फसलें उगाई हैं। एमेलदा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे पूरी तरह से जैविक खेती पर भरोसा करती हैं।

वे रसायनों के बजाय केवल गोबर खाद का उपयोग करती हैं। जिससे सब्जियां न केवल

आकार में बड़ी होती हैं, बल्कि स्वाद में भी लाजवाब होती हैं। उनके खेत में उगने वाले ये विशालकाय कद्दू कोई हाइब्रिड किस्म नहीं, बल्कि शुद्ध 'देहाती' प्रजाति के हैं। जिनके बीज उन्होंने स्थानीय साप्ताहिक बाजार से खरीदे थे।

आश्चर्य की बात यह है कि एमेलदा के खेत में ऐसे विशाल कद्दू पहली बार नहीं उगे हैं। पिछले तीन वर्षों से लगातार उनके यहां हर साल 12 से 15 ऐसे कद्दू निकलते हैं जो लंबाई और वजन में सबको हैरान कर देते हैं।

अपनी इस मेहनत के जरिए वे न केवल अपने बच्चों की बेहतर शिक्षा सुनिश्चित कर रही हैं, बल्कि उन लोगों के लिए भी एक प्रेरणा बन गई हैं, जो रोजगार की तलाश में पलायन को ही एकमात्र रास्ता मानते हैं। एमेलदा की यह सफलता साबित करती है कि यदि पारंपरिक हुनर को सही दिशा और लगन के साथ जोड़ा जाए, तो छोटे से खेत से भी इतिहास रचा जा सकता है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी ....
बोध कथा 02
व्यक्ति विशेष..... 03
पंच परिवर्तन..... 05
संघ शताब्दी वर्ष 07
गांव घर.....09
जिहाद..... 11
अपनी हिन्दी.....13
त्यौहार.....14
स्वास्थ्य.....15
स्मृति शेष.....16
अनुकरणीय..... ....

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

शब्द के अर्थ !

एक राजा ने एक बार अपने मंत्रियों और विद्वानों को बुलाया। उनसे कहा, ''मैं जानना चाहता हूं कि मैं राजा क्यों हूं? मैं ऐसे अनेक व्यक्तियों से मिलता हूं, जो मुझसे अधिक योग्य दिखते हैं, लेकिन उसके बाद भी मैं ही राजा हूं। मुझे पांच दिन के भीतर इस प्रश्न का उत्तर चाहिए। आप सभी लोग अगर ऐसा नहीं कर पाए, तो आपके पद समाप्त कर दिए जाएंगे।''

राजा की घोषणा के बाद मंत्रियों और विशेषज्ञों में हड़कंप मच गया। जिन लोगों को बुलाया गया, उनमें राजा का एक माली भी था, जिसकी सहज बुद्धि से राजा प्रभावित था। इसलिए माली होने के बाद भी उसे दरबार में प्रमुख स्थान प्राप्त था। जब चार दिन बीत गए, तो सभी को बड़ी चिंता हुई। माली ने घर पहुंचकर रात भोजन नहीं किया। उसकी बेटी ने पूछा, पिताजी क्या बात है। माली ने चिंता का कारण बता दिया।

बेटी ने कहा, ''कोई बात नहीं। कल मुझे राजमहल ले चलना। मैं राजा से बात करूंगी।'' उसकी बेटी से राजा भी परिचित था। माली को उसकी बात पर भरोसा तो न हुआ, लेकिन थोड़ी सांत्वना मिल गई। ठीक वैसे जैसे रेगिस्तान में प्यास से जूझते किसी यात्री को कुछ बूंदें मिल जाएं। माली ने सुकून के साथ भोजन किया और विश्राम को चला गया। अगले दिन वह बेटी को लेकर राजमहल पहुंचा।

बेटी ने राजा से कहा, ''इस प्रश्न का उत्तर महल में नहीं मिल सकता। आपको मेरे पीछे–पीछे आना होगा।''

राजा और मंत्रियों के साथ प्रजा भी उसके पीछे चल दी। कुछ किलोमीटर दूर जाने पर एक कुएं के पास एक मेंढक प्यास से तड़प रहा था। माली की बेटी ने पूछा, ''बताओ मेंढक, राजा राजा क्यों है।'' मेंढक ने कहा, ''यह मेरे बस की बात नहीं। यहां से कुछ मील दूर जाओ। ऐसे ही एक कुएं के पास धूल में लोटता मेंढक मिलेगा, उसके पास तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।''

गर्मियों के दिन थे, लेकिन चिलचिलाती धूप में भी कारवां अगले कुएं की ओर बढ़ गया। कुएं के पास जाकर धूल में लोटता हुआ मेंढक मिला। इस मेंढक से भी वही प्रश्न दोहराया गया। मेंढक ने कहा, ''पिछले जन्म की कहानी सुनाता हूं। हम तीन भाई थे। बहुत गरीबी और मुश्किल के दिन थे। किसी तरह हम लोगों को थोड़ा–थोड़ा भोजन मिला। हम लोग भोजन कर ही रहे थे, उसी समय एक भूखा बुजुर्ग व्यक्ति आ गया। हमारे पास बहुत ही थोड़ा भोजन था। मैं सबसे बड़ा था, उसने मुझसे खाना मांगा, तो मैंने उससे कहा, मैं तुम्हें दे दूंगा, तो क्या मैं धूल खाऊंगा।''

फिर उसने दूसरे भाई से कहा, तो उसने कहा, ''तुमको अपना भोजन देकर क्या मैं भूख–प्यास से मर जाऊं।'' जब उसने तीसरे और सबसे छोटे भाई से भोजन मांगा, तो उसने अपने हिस्से का सारा भोजन चुपचाप भूखे बुजुर्ग को यह कहते हुए दे दिया कि उसने तो कल भी खाया था। जबकि वह स्वयं दो दिन से भूखा था। यह राजा, इसलिए राजा है, क्योंकि यही वह तीसरा भाई है। इसके शब्दों के अर्थ का महत्व है। कहते तो बहुत से लोग हैं, लेकिन करते नहीं। इसने शब्द के महत्व को व्यर्थ नहीं किया। उसे कर्म में भी बदल दिया!

यह राजा के राजा होने के कारण से अधिक हमारे व्यवहार और जीवन मूल्य की कहानी है। इस भाव से स्वीकार कीजिए।

जगजीवन राम और सामाजिक समरसता

–सूबेदार सिंह

हिन्दू समाज के निर्धन और वंचित वर्ग के जिन लोगों ने उपेक्षा सहकर भी अपना मनोबल ऊंचा रखा, उनमें बाबू जगजीवन राम का नाम विशेष है। उनका जन्म भोजपुर (बिहार) के चन्दवा गांव में पांच अप्रैल, 1906 को हुआ था। उनके पिता श्री शोभीराम ने कुछ मतभेदों के कारण सेना छोड़ दी थी। उनकी माता श्रीमती बसन्ती देवी ने आर्थिक अभावों के बीच अपने बच्चों को स्वाभिमान से जीना सिखाया।

उनके विद्यालय में हिन्दू, मुसलमान तथा दलित हिन्दुओं के लिए पानी के अलग घड़े रखे जाते थे। उन्होंने अपने मित्रों के साथ मिलकर दलित घड़ों को फोड़ दिया। प्रबन्ध समिति के पूछने पर उन्होंने कहा कि उन्हें हिन्दुओं में बंटवारा स्वीकार नहीं है। अतः सब हिन्दुओं के लिए एक ही घड़े की व्यवस्था की गयी। 1925 में उनके विद्यालय में मालवीय जी आए। वे जगजीवन राम द्वारा दिये गये स्वागत भाषण से अत्यंत प्रभावित हुए। जगजीवन राम ने हाई स्कूल बिहार में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो राज्य में टॉप किया था। मालवीय जी के साथ वहां टेकारी महाराज उपस्थित थे, उन्होंने जगजीवन राम से शिक्षा के लिए बात किया। फिर क्या था मालवीय जी ने जगजीवन राम को काशी बुला लिया।

जब मालवीय जी ने स्वयं बर्तन मांजा

काशी में भी छुआछूत पीछे पड़ी थी। नाई उनके बाल नहीं काटता था। खाना बनाने वाले उन्हें भोजन नहीं देते थे। मोची जूते पॉलिश नहीं करता था। ऐसे में मालवीय जी ही उनका सहारा बनते थे। कई बार तो मालवीय जी स्वयं उनके जूते पॉलिश कर देते थे। भोजन की भी समस्या थी। मालवीय जी उन्हें अपने साथ रखते थे। एक दिन भंडारी ने कहा, ''पंडित जी, मैं इसे भोजन तो करा दूंगा लेकिन इसका बर्तन नहीं साफ करूंगा।'' मालवीय जी कुछ नहीं बोले सिर्फ इतना कहा कि उससे कुछ नहीं कहना। भोजन के पश्चात जगजीवन राम अपनी थाली वहीं छोड़ देते। एक दिन रात्रि में कुछ बर्तन की आवाज आई। भोजन बनाने वाले कर्मचारी ने देखा कि जगजीवन राम का बर्तन मालवीय जी मांज रहे हैं। कर्मचारी ने मालवीय जी का पैर पकड़ लिया, क्षमा मांगी और फिर हमेशा जगजीवन राम का बर्तन साफ करता रहा। ऐसे वातावरण में बाबूजी अपने विद्यालय और काशी नगर में सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध जन जागरण करते रहे।

जगजीवन राम और हिंदू महासभा

बाबू जगजीवन राम का राजनीति में प्रवेश हिंदू महासभा से हुआ था। उनके ऊपर मालवीय जी और वीर सावरकर जी का बहुत प्रभाव था। 1935 में बाबूजी ने हिन्दू महासभा के अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित कराया, जिसमें मंदिर, तालाब एवं कुओं को सब हिन्दुओं के लिए खोलने की बात कही गयी थी। 1936 में उन्होंने प्रत्यक्ष राजनीति में प्रवेश किया और 1986 तक लगातार एक ही सीट से निर्वाचित होते रहे। गांधी जी के आह्वान पर वे कई बार जेल गये। अंग्रेज भारत को हिन्दू, मुसलमान तथा दलित वर्ग के रूप में कई भागों में

बांटना चाहते थे पर बाबूजी ने अपने लोगों को इसके खतरे बताए। देश विभाजन के समय बाबू जगजीवन राम डा. भीमराव अम्बेडकर के पक्ष में थे। डा. भीमराव अम्बेडकर यह चाहते थे कि कोई भी दलित पकिस्तान न जाए। वहीं डा. योगेंद्र मण्डल दलितों सहित पकिस्तान जाना चाहते थे। बाबू जगजीवन राम भी नहीं चाहते थे कि दलित बंधु मुसलमानो के जबड़े में जाएं। वास्ताव में जगजीवन राम सासाराम आर्य समाज के अध्यक्ष भी थे। इसलिए उन्हें कुरान, हदीस और इस्लाम का ज्ञान था। वे डा. भीमराव अम्बेडकर के पक्ष में रहते हुए हिंदू समाज में एकता एवं समरसता के पक्ष में थे। इस प्रकार पाकिस्तान तो बना पर शेष भारत एक ही रहा।

राजनीतिक जीवन

स्वाधीनता के बाद वे लगातार केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य रहे। 1967 से 70 तक खाद्य मंत्री रहते हुए उन्होंने हरित क्रांति का सूत्रपात किया। श्रम मंत्री के नाते वे अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अध्यक्ष भी रहे। रेलमंत्री रहते हुए उन्होंने स्टेशन पर सबको एक लोटे से पानी पिलाने वाले 'पानी पांडे' नियुक्त किये तथा इस पर अधिकांश वंचित वर्ग के लोगों को रखा। 1971 में रक्षा मंत्री के नाते पाकिस्तान की पराजय और बंगलादेश के निर्माण में उनकी बड़ी भूमिका रही। 1975 के आपातकाल से उनके दिल को बहुत चोट लगी पर वे शान्त रहे और चुनाव घोषित होते ही 'कांग्रेस फॉर डेमोक्रैसी' बनाकर कांग्रेस के विरुद्ध चुनाव लड़े। जनता पार्टी के शासन में वे उपप्रधानमंत्री रहे।

राष्ट्रीय चरित्र

1954 में 'हिन्दुस्थान समाचार न्यूज एजेंसी' का उद्घाटन तथा देवनागरी लिपि के प्रथम टेलिप्रिंटर का लोकार्पण पटना में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन तथा दिल्ली में उन्होंने एक साथ किया था। 1974 में छत्रपति शिवाजी के राज्यारोहण की 300 वीं वर्षगांठ पर निर्मित भव्य चित्र का लोकार्पण भी रक्षा मंत्री के नाते उन्होंने किया था। 1978 में दिल्ली में 'विद्या भारती' द्वारा आयोजित बाल संगम में वे पूज्य सरसंघचालक बालासाहब देवरस के साथ मंचासीन हुए। वंचित वर्ग में प्रभाव देखकर मुसलमान तथा ईसाइयों ने उन्हें धर्मान्तरित करने का भी प्रयास किया। गुरु दीक्षा लेते समय अपने पिताजी की तरह उन्होंने भी शिवनारायणी पंथ के संत से दीक्षा ली। छह जुलाई, 1986 को समरस भारत बनाने के इच्छुक बाबूजी का देहांत हुआ।

पहल

प्लास्टिक मुक्त होगा पीएमसीएच

भारत का प्रमुख सरकारी अस्पताल – पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (पीएमसीएच) प्लास्टिक मुक्त बनेगा। इस दिशा में अहम पहल की गई है। अस्पताल के अधीक्षक डा. राजीव कुमार सिंह ने परिसर में सिंगल–यूज प्लास्टिक के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने का आदेश दिया है। अधीक्षक ने स्पष्ट किया कि अस्पताल परिसर में अब प्लास्टिक कैरी बैग, डिस्पोजेबल कप–प्लेट, बोतलें और अन्य सिंगल–यूज प्लास्टिक सामग्री के उपयोग पर रोक रहेगी। इसके स्थान पर कागज, कपड़े या अन्य पर्यावरण अनुकूल विकल्पों को अपनाने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने कहा कि यह कदम न केवल पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि अस्पताल परिसर की स्वच्छता और मरीजों के स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अस्पताल प्रशासन ने सभी विभागाध्यक्षों, कर्मचारियों और ठेकेदारों को इस आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराने को कहा है। कैंटीन संचालकों और दुकानदारों को भी स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है कि वे प्लास्टिक सामग्री का उपयोग बंद करें और वैकल्पिक साधनों को अपनाएं। अधीक्षक के अनुसार, केवल प्रतिबंध लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि लोगों को जागरूक करना भी जरूरी है। इसके लिए अस्पताल परिसर में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा, पोस्टर–बैनर लगाए जाएंगे।

जीवन–शैली में 'स्व' के आयाम

– मनमोहन वैद्य

भारत की स्वदेशी जीवन–शैली में निर्मित वस्तुओं का प्रधानतः उपयोग करने के साथ अनेक महत्वपूर्ण पहलू हैं।

भारत की शिक्षा–पद्धति के मूल्यांकन के लिए 1964–1966 के दौरान डॉ. डी. एस. कोठारी के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग का एक प्रमुख निष्कर्ष यह था कि भारत का वैचारिक जगत यूरोप–केंद्रित हो गया है, जबकि उसे भारत–केंद्रित होना चाहिए। इस तथ्य को समझने के लिए कुछ समकालीन उदाहरणों पर दृष्टि डालना उपयोगी होगा।

दृष्टिकोण का परिवर्तन – यूरोप से भारत की ओर –

मध्य – पूर्व नहीं, पश्चिम एशिया

आज इजराइल और हमास के बीच जो युद्ध चल रहा है, उसे भारत सहित पूरी दुनिया की मीडिया "मध्य–पूर्व (Middle East)" क्षेत्र का युद्ध कह रही है। स्वतंत्रता के बाद भी भारत लंबे समय तक उस भू–भाग को इसी नाम से संबोधित करता रहा। किंतु हाल ही में भारत के विदेश मंत्रालय ने उसे 'पश्चिम एशिया' कहना आरंभ किया है। प्रश्न उठता है – क्या वहाँ युद्ध का स्थान बदल गया? नहीं। बदला है तो हमारा दृष्टिकोण।

खाड़ी के क्षेत्र को "मध्य–पूर्व" कहना दर्शाता है कि हम वैचारिक रूप से यूरोप में बैठकर दुनिया को देख रहे हैं। यूरोप के लिए भारत 'पूर्व' है, जापान 'सुदूर पूर्व (Far East)' और खाड़ी का क्षेत्र "मध्य–पूर्व" है। लेकिन भारत अब स्वतंत्र है। अब हमारी परिभाषाएँ हमारे दृष्टिकोण से होंगी, पश्चिम की नकल से नहीं। इसलिए भारत के लिए यूरोप पश्चिम है, जापान पूर्व है और खाड़ी का क्षेत्र पश्चिम एशिया है।

सोच की यह आधारभूमि भारत की होगी, यूरोप की नहीं। यही स्वदेशी चेतना है।

शासन से न्याय की ओर

अंग्रेज भारत में शासन करने आए थे – To Rule over the People here, इसलिए उन्होंने लोगों को दंडित करने की दृष्टि से अनेक नियम बनाए, जिन्हें Indian Penal Code (IPC) कहा गया। आज भारत में जनता का शासन है। अब उद्देश्य दंड देना नहीं, न्याय प्रदान करना है। इसी भाव से IPC का नाम बदलकर भारतीय न्याय संहिता (BN) किया गया। यह केवल नाम परिवर्तन नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का परिवर्तन है।

ऐसे अनेक परिवर्तन सरकार द्वारा किए जा रहे हैं और आगे भी होंगे।

कालगणना और भारतीय चेतना

अंग्रेजों के आने से पहले भारत में सूर्य, चंद्र और पृथ्वी की गति पर आधारित शास्त्रसम्मत कालगणना प्रचलित थी। महीनों के नाम भी नक्षत्रों पर आधारित थे। हमारे शास्त्रज्ञ 50–100 वर्षों बाद होने वाले सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण की भी सटीक गणना कर लेते थे। पश्चिम का ग्रेगोरियन कैलेंडर प्रारंभ में केवल दस महीनों का था। सितंबर, अक्टूबर, नवंबर और दिसंबर – इन नामों के अर्थ ही सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ और दसवाँ हैं। बाद में गिनती पूरी करने के लिए जूलियस सीजर ने जुलाई और सम्राट ऑगस्टस ने अगस्त महीना जोड़ा। इस प्रकार सातवाँ कहलाने वाला महीना नौवाँ बन गया।

भारतीय तिथि और जीवन के संस्कार – आज भी भारत में हमारे सभी पर्व अंग्रेजी तारीख से नहीं, बल्कि भारतीय तिथि से ही मनाए जाते हैं, जैसे –

रामनवमी चैत्र शुक्ल नवमी को, रक्षाबंधन श्रावण पूर्णिमा को, जन्माष्टमी श्रावण भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को, नवरात्रि अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को और विजयादशमी अश्विन शुक्ल दशमी को ही। अंग्रेजी तारीख चाहे जो हो, पर्व तिथि के अनुसार ही होते हैं।

तो प्रश्न यह है कि – क्या हम अपने जन्मदिन और विवाह की वर्षगाँठ भी भारतीय तिथि के अनुसार नहीं मना सकते? विवाह का दिन तय करते समय हम पंडित से शुभ मुहूर्त पूछते हैं, फिर उसकी वर्षगाँठ केवल अंग्रेजी तारीख से क्यों? यह आग्रह इसलिए है क्योंकि यह हमारी कालगणना है – प्राचीन, शास्त्रीय और वैज्ञानिक। यह हमारा 'स्व' है।

जन्मदिन का भाव बदलता है..

अंग्रेजी तारीख के अनुसार जन्मदिन मनाने में आधी रात तक प्रतीक्षा करना, फिर केक काटना और चेहरे पर केक का क्रीम लगाने जैसी भद्दी परंपराएँ चल पड़ी हैं।

भारतीय परंपरा में दिन का आरंभ ब्रह्ममुहूर्त (सूर्योदय से पूर्व) में होता है। यदि तिथि के अनुसार जन्मदिन मनाया जाए, तो पूरा भाव–विश्व बदल जाता है –

सुबह जल्दी उठना, स्नान कर ईश्वर के समक्ष दीप प्रज्वलित करना, घर के बुजुर्गों को प्रणाम करना, कोई अच्छा संकल्प लेना और समाज के लिए कुछ करने का निश्चय करना।

ऐसा जन्मदिन मनाने से पूरे कुटुंब में आनंद, संस्कार और उत्सव का वातावरण बनता है।

यही भारत की स्वदेशी जीवन–शैली है –जहाँ सोच, समय, संस्कार और व्यवहार – सब कुछ अपने 'स्व' से जुड़ा हुआ हो। कम खर्च में, बिना किसी के विरोध के, केवल दृष्टि बदलकर हम अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण और भारतीय बना सकते हैं।

(क्रमशः)

विज्ञान सम्मत है ज्योतिष विद्या

पटना में 3 दिवसीय (3–5 अप्रैल) अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष, वास्तु एवं तंत्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में सभी वक्ताओं एक स्वर से कहा कि ज्योतिष विज्ञान सम्मत है। पश्चिमी जगत के विद्वान भी ज्योतिष के गणितीय भाग को मानते हैं लेकिन इसके फलित भाग को अंधविश्वास बताते हैं, जो सर्वथा गलत है। वास्तव में मानव शरीर पर ब्रह्म रंध्र के माध्यम से सातों ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। इस सम्मेलन में भारत, नेपाल समेत कई देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन के बाद पटना घोषणा पत्र भी जारी किया गया। इसमें 7 बिंदुओं पर जोड़ दिया गया है।

मानवता के मार्गदर्शन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका – दत्तात्रेय जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में गुवाहाटी महानगर ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी में 'युवा सम्मेलन' का आयोजन किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के सैकड़ों विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की प्रत्येक भाषा राष्ट्रीय भाषा है, जबकि कुछ भारतीय भाषाएँ संपर्क भाषा के रूप में संवाद को सुगम बनाती हैं। उन्होंने संस्कृत को भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक आधारशिला बताया।

आधुनिकता पर उन्होंने कहा कि आधुनिकीकरण को केवल पाश्चात्यकरण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। वास्तविक आधुनिकता नवाचार को अपनाने के साथ–साथ शाश्वत सभ्यतागत मूल्यों को बनाए रखने में है। उन्होंने सनातन चिंतन को 'नित्य नवीन और चिर पुरातन' बताते हुए कहा कि संघ की स्थापना इन्हीं स्थायी सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्जागरण तथा स्वतंत्रता के दशकों बाद भी संस्थानों और बौद्धिक विमर्शों पर प्रभाव डाल रही औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के उद्देश्य से हुई थी।

भारत की सभ्यतागत एकता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कालिदास, आदि शंकराचार्य और राम मनोहर लोहिया जैसे विचारकों का संदर्भ दिया। लोहिया का उद्धरण देते हुए कहा कि भगवान राम उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने के प्रतीक हैं। भगवान कृष्ण पूर्व और पश्चिम को जोड़ते हैं, जबकि शिव तत्व सम्पूर्ण भारत की एकात्म चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। पूर्वोत्तर भारत का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि असम आंदोलन के दौरान अवैध घुसपैठ के विरोध में संघ के स्वयंसेवकों ने रचनात्मक भूमिका निभाई, जो राष्ट्रीय विषयों के प्रति उनकी सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि भाषा, परंपरा और जीवनशैली की विविधता समाज को विभाजित करने के बजाय उसे और सशक्त बनाती है, क्योंकि साझा सांस्कृतिक चेतना राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधती है। संतुलित विकास के लिए व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र दोनों आवश्यक हैं। भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक मूल्यों का उन्नयन साथ–साथ चलना चाहिए। यदि भौतिक आवश्यकताएँ पूरी न हों तो सांस्कृतिक विमर्श अधूरा रह जाता है।

राष्ट्रीय परिवर्तन के संदर्भ में उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन दोनों की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे जाति, पंथ, जनजाति या भाषा के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त किया जा सके। उन्होंने 'पंच परिवर्तन' की धारणा का उल्लेख करते हुए भारतीय परिवार व्यवस्था के संरक्षण, पर्यावरण के प्रति दैनिक जीवन में उत्तरदायित्व, सामाजिक समरसता के सुदृढ़ीकरण, नागरिक अनुशासन के विकास तथा शिक्षा, उद्योग और विकास मॉडल में 'स्व' की भावना को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया।

पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय परंपराएँ विविधता में एकता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं और साझा सांस्कृतिक भाव को प्रतिबिंबित करती हैं। यूनिटी का अर्थ यूनिफॉर्मिटी नहीं, बल्कि एकता तथा समरसता हमारी विविधता को शक्ति में बदलती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल परिवर्तन के युग में 'मानसिक उपनिवेशवाद से मुक्ति' का आह्वान करते हुए उन्होंने आधुनिक तकनीकों को अपनाने के साथ स्वदेशी दृष्टि और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रहने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि जो भी व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र के लिए कार्य करता है, वही स्वयंसेवक की भावना का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे उसका औपचारिक संगठनात्मक संबंध हो या नहीं।

उन्होने स्पष्ट रूप से कहा कि भारत की सभ्यतागत दृष्टि मानवता के मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित सामूहिक प्रयास ही एक सशक्त और समरस राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

पंच परिवर्तन से होगा राष्ट्र सशक्त – आलोक कुमार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन का कार्यक्रम निर्धारित किया है। ये पांच परिवर्तन हैं – स्व का बोध तथा स्वदेशी का उपयोग, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्त्तव्य बोध। इन पंच परिवर्तनों के माध्यम से समाज और राष्ट्र सशक्त होगा। उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह आलोक कुमार ने पटना के विजय निकेतन में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा।

पटना के विजय निकेतन में संघ शताब्दी वर्ष के अंतर्गत प्रमुख जन संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा निर्धारित बद्रीनाथ उपभाग के प्रमुख जन उपस्थित थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सह सरकार्यवाह जी ने कहा कि प्रकृति के विकास में ही सबका विकास है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता का स्थान दिया गया है। प्रकृति को छोड़कर कोई विकास संभव नहीं है। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की नहीं बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। हम लोगों का नारा है – ''वृक्ष लगाओ, जल बचाओ और प्लास्टिक हटाओ।''

उन्होंने कहा कि संस्कारों की प्रथम पाठशाला अपना परिवार होता है। यदि परिवार सशक्त है तो समाज सशक्त होगा। आज एकल परिवार, पीढ़ियों का टकराव और नैतिक शून्यता चिंता का विषय है। भारतीय संस्कृति में परिवार केवल सुविधा नहीं बल्कि संस्कारों की प्रयोगशाला है। डॉक्टर हेडगेवार स्वयं कहते थे अच्छा स्वयंसेवक वही है जो घर, समाज और राष्ट्र तीनों के प्रति उत्तरदायी हो। यदि परिवार सुसंस्कृत है तो व्यक्ति को अलग से चरित्र निर्माण की पाठशाला की आवश्यकता नहीं पड़ती। वास्तव में कुटुंब प्रबोधन वह आधार है जहां से चरित्रवान नागरिक का निर्माण होता है। पंच परिवर्तन के माध्यम से ही आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना की जा सकती है।

इसी प्रकार सामाजिक समरसता पंच परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत की विविधता– जाति, भाषा, पंथ, क्षेत्र हमारी शक्ति है, यदि उसमें भेद नहीं भाव हो। सामाजिक समरसता का तात्पर्य हर व्यक्ति को सम्मान देना है। जन्म या पहचान के आधार पर नहीं बल्कि मानवीय गुणों के आधार पर मूल्यांकन होना चाहिए। जब समाज समरस होता है तभी राष्ट्र एकजुट होकर चुनौतियों का सामना कर सकता है।

उन्होंने बताया कि स्व के बोध का तात्पर्य अपने अस्तित्व, अपने कर्त्तव्य और अपनी भूमिका को सही रूप से समझना है। इसके साथ स्वदेशी वस्तुओं के बारे में आग्रह भी करना है। स्व आधारित जीवन का तात्पर्य है कि आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी आयामों में हमें स्वयं के पैरों पर खड़ा होना है। आत्मनिर्भरता के अभाव में दूसरों के ऊपर हमारे निर्भरता बढ़ जाएगी और हम सुरक्षा के शिकार बने रहेंगे। और सबसे महत्वपूर्ण है नागरिक कर्त्तव्य बोध। हर व्यक्ति राष्ट्र सेवक है। पूरा समाज अपना परिवार है, इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक किसी भी राष्ट्रीय आपदा में हमेशा सबसे आगे रहते हैं। कोरोना के काल में जब बड़ी–बड़ी संस्थाओं ने हाथ खड़े कर दिए तब संघ के स्वयंसेवक अपने कर्त्तव्य बोध को समझते हुए सेवा के लिए तत्पर दिखे। संघ का स्वयंसेवक आपदा, महामारी, सामाजिक संकट जैसी विकट परिस्थिति में बिना नाम यश की चिंता किए सेवा करता है। यही कर्त्तव्य बोध का जीवंत उदाहरण है।

कार्यक्रम में मंच पर दक्षिण बिहार के प्रांत संघचालक राजकुमार सिन्हा एवं बद्रीनाथ उपभाग के सह संघचालक भरत पूर्वे उपस्थित थे।

हर घर फौजीवाला गांव

सारण की मिट्टी में कुछ विशेष है। यहां देशप्रेम, बहादुरी और दिलेरी को ही धर्म समझा जाता है। स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र सारण ही था। यहां भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने कई रात बिताई है। यहां की वीरांगनाओं ने थाना पर ही कब्जा कर लिया था। ऐसे ही सारण के दो गांव ऐसे हैं, जहां फौज में भर्ती होने को धर्म माना जाता है। ये गांव हैं मांझी प्रखंड के धर्मपुरा और चंदउपुर गांव। आदर्श पंचायत बरेजा के अंतर्गत धर्मपुरा आता है वहीं गोबरही पंचायत के अंतर्गत चंदउपुर।

सारण जिला मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में मांझी प्रखंड क्षेत्र के बरेजा पंचायत अंतर्गत धर्मपुरा गांव का चप्पा चप्पा जवानों की कहानियां कहता है। मांझी एकमा मुख्यमार्ग पर स्थित धर्मपुरा गांव में प्रवेश के पूर्व ही मुख्य मार्ग के किनारे धर्मपुरा पोखरा के किनारे स्थित शिलालेख धर्मपुरा गांव के जवानों की कहानी बयान करता है। जहां के 17 वाशिंदो ने स्वतंत्रता के पूर्व 1914 –1919 के मध्य हुए प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था।

यहां के युवा फौज में जाना अपना धर्म समझते हैं। बचपन से ही सेना की तैयारी में लग जाते हैं। यहां के दर्जनों लाल सेना में अधिकारी एवं जवान के रूप में देशसेवा में लगे हैं। धर्मपुरा के लोग बड़े उत्साह से बताते हैं कि उनका बेटा सेना में अधिकारी है। प्रत्येक वर्ष गांव से दो–चार लड़कों का चयन सेना में होता है। कुछ परिवार ऐसे भी हैं जिनकी तीन से चार पीढ़ियां सेना में हैं। करीब 4 हजार की आबादी वाले इस गांव में 500 से अधिक फौजी हैं। कृषि प्रधान इस गांव की साक्षरता दर 70 प्रतिशत से अधिक है।

आर्मी में कैप्टन रहे सेवानिवृत्त दामोदर सिंह

के दो पुत्र राजेश कुमार सिंह एवं संजीव कुमार सिंह आर्मी में अफसर हैं। जबकि एक पुत्री आर्मी में ही डॉक्टर हैं। इसी तरह बीएसएफ से सेवानिवृत्त रामेश्वर सिंह के पुत्र अभिमन्यु कुमार सिंह कमांडेंट हैं। जितेंद्र सिंह की पुत्री सावित सिंह कर्नल हैं। सेवानिवृत्त फौजी शिव कुमार सिंह के एक पुत्र और तीन पोते सेना में विभिन्न पदों पर हैं। वहीं प्रधानमंत्री के सुरक्षा दस्ते (एनएसजी) में कई वर्षों तक रहे एनके सिंह के परिवार के कई लोग फौज में हैं। गांव के उमेश पाठक सीआरपीएफ में बड़े पद पर हैं। राजकिशोर पाठक के पुत्र समीर पाठक और असम राइफल्स गोवाहाटी में तैनात नंदकिशोर पाठक के पुत्र अमित कुमार पाठक सेना में डॉक्टर हैं। इसी तरह सुबोध कुमार सिंह, संतोष कुमार सिंह, विपिन सिंह जैसे कई लोग इस गांव का सीना गर्व से ऊंचा कर रहे हैं।

बिहार रेजिमेंट के हवलदार पद से रिटायर शशिकांत सिंह, जयनाथ सिंह, महेश्वर पाठक, ब्रजेश कु सिंह के अनुसार वर्तमान में यहां करीब पांच सौ लोग सेना में है। इसके अलावा बीएसएफ में करीब एक सौ युवा हैं। जिनमे बीएसएफ के असिस्टेंट कमांडेंट अविनाश कुमार सहित करीब 10 ऑफिसर रैंक पर हैं। सीआरपीएफ में करीब 150, बीएमपी में 50, आईटीबीपी में 10, पुलिस में 7 दारोगा सहित 35 लोग ड्यूटी पर कार्यरत हैं। जबकि सेना, सीआरपीएफ, बीएमपी तथा पुलिस के विभिन्न पदों से रिटायर होने वालों की संख्या भी करीब 5 सौ है।

ग्रामीणों के अनुसार यहां के फौजी राष्ट्र की सुरक्षा करने में स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं। 1962 के भारत–चीन युद्ध में यहाँ के 10 सैनिकों ने भाग लिया था। 1971 के भारत–पाक युद्ध में करीब 100 और कारगिल युद्ध में भी यहाँ के करीब 100 जाँबाज सैनिकों ने दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दिया था। गत दशक सेना में नौकरी के दौरान दो युवक शहीद हो चुके हैं। जिनमे 2013 में ददन सिंह के फौजी पुत्र राणा सिंह छत्तीसगढ़ में नक्सलियों द्वारा विस्फोट कर वाहन उड़ा देने के कारण शहीद हो गए थे। वहीं कामेश्वर पाठक के पुत्र पप्पू पाठक 2015 में पंजाब में ड्यूटी के दौरान आतंकवादी हमले में शहीद हो गए थे।

धर्मपुरा गांव के युवक मैट्रिक व इंटर की पढ़ाई के साथ–साथ फौज में भर्ती के लिए तैयारी में जुट जाते हैं। गांव में जगह–जगह बॉलीबॉल खेलते देखा जा सकता है। गांव से पूरब करीब एक किलोमीटर दूर स्थित मैदान में यहाँ के लड़के सुबह–शाम नियमित प्रैक्टिस करते हैं। जिसमें फुटबॉल खेलना, दौड़, सपाट, ऊँची–कूद, लम्बी–कूद आदि शामिल हैं। गांव में ट्रेनिंग देने के लिए कोई कोच नही हैं। छुट्टी पर गांव आने वाले जवान और रिटायर सैन्य–कर्मी युवाओं में जोश भरने और सफलता के टिप्स सिखाने का काम करते हैं।

पंचायत के मुखिया राजेश पाण्डेय बताते हैं कि बरेजा पंचायत स्थित धर्मपुरा के युवा सेना में जाने के लिए प्रतिदिन कड़ी मेहनत करते हैं। हर साल इस गांव के युवाओं का सेना में विभिन्न पदों पर चयन होता है। अग्निवीर योजना के कारण यहां के नौजवानों में सेना के प्रति रुझान कुछ कम हुआ है।

चंदउपुर गांव की आबादी करीब 12 सौ है। यहाँ करीब 180 परिवार है। 2 सौ से अधिक लोग यहां भी फौज में है। यहाँ भी हर घर में फौजी हैं। शिक्षक सकलदीप सिंह, रिटायर फौजी जयनाथ सिंह आदि ने बताया कि नई पीढ़ी में भी सेना में भर्ती की गहरी रूचि है।

नासिक के टीसीएस दफ्तर में जिहाद

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) के नासिक ऑफिस में यौन उत्पीड़न और जबरन धर्म बदलने के गंभीर आरोप लगे हैं। एक गवाह ने बताया कि आरोपी लोग दूसरों को कहते थे, ''हिंदू लड़कियों से दोस्ती करो और उनसे शादी कर लो।'' वे उन्हें अपना धर्म छोड़ने और अपना धर्म अपनाने के लिए भी कहते थे।

पुलिस इस मामले में कुल नौ शिकायतों की जांच कर रही है। अब तक सात लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें छह पुरुष और एक महिला शामिल है। एक अन्य महिला कर्मचारी अभी फरार है।

हिंदू लड़कियों को गर्लफ्रेंड बनाओ और शादी करो

नासिक ऑफिस में कॉन्ट्रैक्ट पर काम करने वाले एक कर्मचारी ने बताया, वे कहते थे कि हिंदू लड़कियों को गर्लफ्रेंड बनाओ और शादी करो। वे उन्हें धर्म बदलने के लिए उकसाते थे और अपने धर्म की बातें करते थे। आरोपियों को इस काम के लिए पैसे भी दिए जाते थे। यह सब 2021 से चल रहा था। यहां तक कि महिला को भी पैसे दिए गए थे।

पुलिस ने पिछले हफ्ते आठ महिला कर्मचारियों की शिकायतों पर एक विशेष जांच टीम (SIT) बनाई थी। इन महिलाओं ने आरोप लगाया कि उनके सीनियर अधिकारियों ने उनके साथ मानसिक और यौन उत्पीड़न किया। जब उन्होंने एचआर विभाग में शिकायत की, तो कोई सुनवाई नहीं हुई। ये घटनाएं फरवरी में शिकायत की, तो कोई सुनवाई नहीं हुई। ये घटनाएं फरवरी 2022 से मार्च 2026 तक हुईं।

पुलिस के अनुसार, एक आरोपी ने शादी का झूठा वादा करके एक महिला कर्मचारी के साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। एक अन्य महिला को उसने अनुचित तरीके से छुआ और उसकी शादीशुदा जिंदगी के बारे में शर्मनाक बातें कीं।

जब शिकायतकर्ता ने कंपनी के बड़े अधिकारियों से

बार–बार शिकायत की, तो उन्होंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उल्टा, उन्होंने आरोपियों के काम को बढ़ावा दिया। आरोपियों ने महिलाओं की शारीरिक बनावट पर भी अश्लील टिप्पणियां कीं। एक पुरुष कर्मचारी पर भी आरोप है कि उसे जबरन नमाज पढ़ने के लिए मजबूर किया गया और उसके धर्म का अपमान किया गया।

नमाज पढ़ने और हिजाब पहनने के लिए प्रेरित किया

गिरफ्तार किए गए लोगों के नाम दानिश शेख, तौसीफ अत्तार, रजा मेमन, शाहरुख कुरैशी, शफी शेख, आसिफ आफताब अंसारी और एचआर मैनेजर निदा खान है। निदा खान को 'लेडी कैप्टन' कहा जा रहा है। आरोप है कि उन्होंने महिलाओं से दोस्ती की, उन्हें सहज महसूस कराया और फिर धीरे–धीरे उन्हें नमाज पढ़ने और हिजाब पहनने के लिए प्रेरित किया।

यह मुद्दा कोई नया नहीं है। कुछ शिकायतें तो 2022 की हैं। हालांकि इस साल मार्च में मामला तब और बढ़ गया जब एक महिला ने अपने एक सहकर्मी पर शादी का झूठा वादा करके उसके साथ संबंध रखने का आरोप लगाया। उस एक शिकायत के बाद तो शिकायतों का सिलसिला ही शुरू हो गया। और भी कर्मचारी सामने आए, FIR की संख्या बढ़ गई, गिरफ्तारियां हुईं, और अब महाराष्ट्र पुलिसकी विशेष जांच दल (SIT) उन आरोपों की जांच कर रहा है जो कई सालों से कंपनी में चल रहा था।

ये हैं गिरफ्तार आरोपी

पुलिस के अनुसार, अब तक मामले में 9 मामले दर्ज की गई हैं। और इस मामले के संबंध में कई गिरफ्तारियां भी हुई हैं। आरोपियों को अदालत में पेश किया गया और पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। नासिक पुलिस कमिश्नर संदीप कर्णिक की देखरेख में, इस मामले की जांच ACP क्राइम संदीप मितके के नेतृत्व वाली एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम कर रही है। अधिकारियों ने बताया कि इन आरोपों में यौन अपराध और काम की जगह पर धार्मिक दबाव बनाने के दावे, दोनों शामिल हैं।

टीम लीड्स पर धमकाने और नौकरी से निकालने का आरोप

पुलिस ने बताया कि पहली प्राथमिकी मार्च 2026 में खुफिया जानकारी मिलने के बाद दर्ज की गई थी, जिसके बाद और भी शिकायतें सामने आईं। पीड़ितों ने उत्पीड़न, दबाव और शिकायतों को नजरअंदाज किए जाने के आरोप लगाए हैं। कई महिला कर्मचारियों और एक पुरुष सहकर्मी ने नासिक शहर पुलिस से संपर्क कर आरोप लगाया है कि सीनियर कर्मचारियों, खासकर टीम लीड्स के एक समूह द्वारा उनके साथ लगातार उत्पीड़न किया जा रहा है।

जबरन नमाज पढ़ने और धर्म परिवर्तन का दबाव

शिकायतकर्ताओं ने बार–बार गलत तरीके से छूने, अश्लील टिप्पणियां करने, छेड़छाड़ करने और कुछ मामलों में शादी के झूठे वादे करके शारीरिक संबंध बनाने के आरोप लगाए हैं। पीड़ितों ने यह भी बताया कि उन पर धर्म परिवर्तन करने, नमाज पढ़ने और मुस्लिम धर्म के आयोजनों में शामिल होने का दबाव डाला गया। कुछ ने तो यह भी आरोप लगाया कि उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए उकसाने की कोशिशें की गईं।

निदा खान की मिलीभगत का आरोप

एक अलग शिकायत में, एक पुरुष कर्मचारी ने दावा किया कि उसे उसकी मर्जी के खिलाफ धार्मिक गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए मजबूर किया गया। कई शिकायतकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने पहले भी सीनियर अधिकारियों और HR विभाग के सामने यह मुद्दा उठाया था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। जांच के दौरान यह पता चला कि एक प्रमुख महिला निदा खान खुद इस खौफनाक साजिश में शामिल थी। उससे बार–बार शिकायतें की गईं लेकिन उसने कोई एक्शन नहीं लिया। निदा खान का बयान 10 अप्रैल, 2026 को दर्ज किया गया था।

WhatsApp ग्रुप और टारगेट करने के आरोपों की जांच

सूत्रों के मुताबिक, कुछ कर्मचारियों ने कथित तौर पर WhatsApp ग्रुप बनाए थे, जिनमें कमजोर सहकर्मियों को टारगेट करने के बारे में चर्चा होती थी। जांचकर्ता अब उन आरोपों की जांच कर रहे हैं कि जूनियर कर्मचारियों, खासकर युवा हिंदू महिलाओं की पहचान करके, उन्हें प्रलोभन या निजी प्रभाव का इस्तेमाल करके संपर्क किया गया। पुलिस ने इस मामले को कार्यस्थल के अंदर सक्रिय एक ग्रुप से जुड़ा बताया है, और कथित गतिविधियों की सीमा का पता लगाने के लिए सभी पहलुओं से जांच कर रही है। अधिकारियों ने ज्यादा पीड़ितों से आगे आने की अपील भी की है और शिकायतों के लिए एक खास नंबर भी जारी किया है।

जो बात वर्क प्लेस पर एक शिकायत के तौर पर शुरू हुई थी, वह अब एक ऐसे मामले में बदल गई है जिस पर पूरे देश का ध्यान जा रहा है। यह केस भी कोई छोटी कंपनी नहीं, बल्कि टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज की BPO यूनिट का है। राजनीतिक नेताओं की तरफ से भी कड़ी प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। मामला तूल पकड़ता जा रहा है। टीसीएस के बाहर सुबह से शाम तक प्रदर्शन हो रहे हैं। महाराष्ट्र की सियासत गरमा गई है।

सही शीर्षक

—रवींद्र कुमार

1. यातायात नियमों का पालन कर दुर्घटना का करें बचाव

विभक्ति चिह्न का सही चयन नहीं होने के कारण यह शीर्षक कैसे अटपटा हो गया है, इसके लिए इसी से मिलते–जुलते एक अन्य शीर्षक का उदाहरण लें– 'कीटनाशक का छिड़काव कर फसल का करें बचाव।' यहां 'फसल का बचाव' से हमारा तात्पर्य यह होता है कि उसे किसी प्रकार का नुकसान न हो और वह बढ़े एवं फूले–फले। फिर, 'दुर्घटना का बचाव' करने का भी यही अर्थ होगा न कि इसमें किसी प्रकार की कमी न हो। ऐसी गड़बड़ी इसलिए हुई है कि यहां विभक्ति चिह्न 'से' के बदले 'का' का प्रयोग कर दिया गया है। अतः सही अर्थ प्रकट करने के लिए शीर्षक होना चाहिए था–

यातायात नियमों का पालन कर दुर्घटना से करें बचाव

---

2. वर्षापात की गलत प्रतिवेदन रिपोर्ट देने की जांच शुरू

यह शीर्षक पुनरुक्ति दोष का शिकार है, क्योंकि प्रतिवेदन और रिपोर्ट मिलते–जुलते शब्द हैं। अंग्रेजी में प्रतिवेदन के लिए ही रिपोर्ट शब्द का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में इन दोनों में से किसी एक शब्द का प्रयोग पर्याप्त था। अतः पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना चाहिए था–

वर्षापात का गलत प्रतिवेदन देने की जांच शुरू

अथवा

वर्षापात की गलत रिपोर्ट देने की जांच शुरू

---

3. सत्तर साल में मिली पी.एच.डी. की डिग्री

इस शीर्षक का उद्देश्य यह बतालाना है कि एक उत्साही बुजुर्ग ने अध्ययन के प्रति अपनी लगन का परिचय देते हुए बुढ़ापे यानी 70 साल की उम्र में पीएच. डी. की डिग्री प्राप्त की। लेकिन, इस शीर्षक का अर्थ यह निकलता है कि उक्त व्यक्ति को पीएच.डी. की डिग्री लेने में 70 साल लग गए। ऐसा इसलिए कि यदि शीर्षक 'दो साल में मिली पीएच.डी. की डिग्री' हो, तो इसका अर्थ यही निकलेगा न कि पीएच.डी. करने में दो साल लगे। अतः अभिप्रेत भाव की अभिव्यक्ति के लिए यहां शीर्षक होना चाहिए –

सत्तर साल की उम्र में मिली पीएच.डी. की डिग्री

---

4. शिक्षकों पर कार्रवाई में जल्दीबाजी से बचें : एस.पी.

इस शीर्षक का 'जल्दीबाजी' शब्द गलत है, क्योंकि ऐसा कोई शब्द ही नहीं है। दरअसल, उर्दू के माध्यम से हिंदी में आया शब्द 'जल्द' है, जो क्रिया विशेषण है। इसमें 'बाज', 'बाजी' और ई प्रत्यय लगने से क्रमशः जल्दबाद, जल्दबाजी और जल्दी शब्द बनते हैं। इनमें जल्दबाज विशेषण तथा जल्दी और जल्दबाजी संज्ञा हैं। ये दोनों संज्ञाएं प्रायः समान अर्थ देती हैं। हालांकि जल्दबाजी 'हड़बड़ी' के भी निकट हैं। अतः इस शीर्षक में शुद्धता की दृष्टि से जल्दी या जल्दबाजी का प्रयोग होगा और तब यह शीर्षक होगा–

शिक्षकों पर कार्रवाई में जल्दबाजी से बचें : एस.पी.

अथवा

शिक्षकों पर कार्रवाई में जल्दी से बचें : एस. पी

---

5. बोन मैरो ट्रांसप्लांट से कैंसर के इलाज में मरीजों को मिल रही सफलता

शब्दों का उचित स्थान पर प्रयोग नहीं करने से भावाभिव्यक्ति में कैसे परेशानी हो जाती है, यह शीर्षक इसका उदाहरण है। इस शीर्षक के समाचार में बताया गया है कि इलाज की नई पद्धति बोन मैरो ट्रांसप्लांट से कैंसर मरीजों के इलाज में डॉक्टरों को सफलता मिल रही है। लेकिन, इस शीर्षक से ऐसा लगता है, जैसे कैंसर का इलाज डॉक्टर नहीं, बल्कि मरीज कर रहे हों और कैंसर का इलाज करने में मरीजों को सफलता भी मिल रही हो। इससे स्पष्ट है कि शीर्षक लगाने में सही शब्दों का चयन ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका उचित स्थान पर प्रयोग भी आवश्यक है। अतः सही भावभिव्यक्ति के लिए यह शीर्षक इस प्रकार लिखा जाना चाहिए था –

बोन मैरो ट्रांसप्लांट से कैंसर मरीजों के इलाज में मिल रही सफलता

अथवा

बोन मैरो ट्रांसप्लांट से कैंसर के इलाज में डॉक्टरों को मिल रही सफलता

अथवा

बोन मैरो ट्रांसप्लांट से इलाज कराने में कैंसर मरीजों को मिल रहा फायदा

अक्षय तृतीया का आध्यात्मिक महत्त्व!

अक्षय तृतीया का त्यौहार वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया तिथि पर (इस वर्ष 19 अप्रैल, 2026 को) मनाया जाता है। अक्षय तृतीया को उत्तर भारत में 'आखा तीज' भी कहते है। इस दिन सत्ययुग समाप्त होकर त्रेतायुग का प्रारंभ हुआ, ऐसा माना जाता है। इस कारण से यह एक संधिकाल है। मुहूर्त कुछ ही क्षणों का होता है परंतु अक्षय तृतीया संधिकाल होने से उसका परिणाम 24 घंटे तक रहता है। इसलिए यह पूरा दिन ही अच्छे कार्यों के लिए शुभ माना जाता है।

अक्षय तृतीया के दिन दान देने का महत्त्व– पुराणकालीन 'मदनरत्न' नामक संस्कृत ग्रंथ के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को इस दिन का महत्व बताया है। वे कहते हैं, इस तिथि को दिए हुए दान तथा किए गए हवन का क्षय नहीं होता। इसलिए मुनियों ने इसे 'अक्षय तृतीया' कहा है। देवों तथा पितरों के लिए इस तिथि पर जो कर्म किया जाता है, वह अक्षय अर्थात अविनाशी होता है।' अक्षय तृतीया के दिन दिए गए दान का कभी क्षय नहीं होता। अक्षय तृतीया के दिन पितरों के लिए आमान्न अर्थात दान दिए जाने योग्य कच्चा अन्न, उदककुंभय अर्थात जल भरा कलश, 'खस' का पंखा, छाता, पादत्राण अर्थात जूते–चप्पल आदि वस्तुओं का दान करने के लिए पुराणों में बताया है ।

सत्पात्र व्यक्ति को ही क्यों दान देना चाहिए? रू अक्षय तृतीया के दिन किए दान से व्यक्ति के पुण्य का संचय बढता है। पुण्य के कारण व्यक्ति को स्वर्ग प्राप्ति हो सकती है, परंतु स्वर्ग सुख का उपभोग करने के उपरांत पुनः पृथ्वी पर जन्म लेना पडता है। मनुष्य का अंतिम ध्येय 'पुण्य प्राप्ति कर स्वर्ग प्राप्ति करना' ही नहीं, अपितु 'पाप–पुण्य के परे जाकर ईश्वर प्राप्ति करना' होता है। इसलिए मनुष्य को सत्पात्रे दान करना चाहिए। सत्पात्र व्यक्ति को दान करने पर यह कर्म 'अकर्म कर्म' हो जाता है तथा ऐसा करने से मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति होती है, अर्थात वह स्वर्ग लोक में न जाकर उच्च लोक में जाता है। संत, धार्मिक कार्य

करनेवाले व्यक्ति, समाज में धर्म प्रसार करनेवाली आध्यात्मिक संस्था तथा राष्ट्र एवं धर्म जागृति करनेवाले धर्माभिमानी को दान करना ही कालानुरूप सत्पात्र दान है।

अक्षय तृतीया का महत्त्व– अक्षय तृतीया के दिन ही हयग्रीव अवतार, परशुराम अवतार एवं नर नारायण अवतार का प्रकटीकरण हुआ है तथा इसी दिन ब्रह्मा एवं श्रीविष्णु इन दो देवताओं का सम्मिलित तत्व पृथ्वी पर आता है। इससे पृथ्वी की सात्विकता 10 प्रतिशत बढ जाती है। इस कालमहिमा के कारण इस तिथि पर पवित्र नदियों में स्नान, दान आदि धार्मिक कृत्य करने से अधिक आध्यात्मिक लाभ होते हैं। इस तिथि पर देवता–पितर के निमित्त जो कर्म किए जाते हैं, वे संपूर्णतः अक्षय (अविनाशी) होते हैं।

अक्षय तृतीया की संपूर्ण अवधि, शुभ मुहूर्त ही होती है। इसलिए इस दिन बिना पंचांग देखे शुभ एवं मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह–प्रवेश, वस्त्र–आभूषण की खरीदारी अथवा घर, भूखंड, वाहन आदि की खरीदारी की जा सकती हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करना अथवा उद्घाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। इस दिन गंगा स्नान तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। अक्षय तृतीया संधिकाल है। हिन्दू धर्म में संधिकाल का महत्व बताया गया है कि संधिकाल में की गई साधना का फल अनेक गुना मिलता है। यह तिथि वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ का दिन भी है।

गर्मी में अपना स्वास्थ्य

—दीप शिखा

गर्मी का महीना अपने साथ तेज धूप, बढ़ता तापमान और कई स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ लेकर आता है। यह मौसम जितना प्रकृति के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही हमारे शरीर के लिए सावधानी बरतने का संकेत भी देता है। यदि इस समय उचित देखभाल न की जाए, तो छोटी–छोटी लापरवाहियाँ बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकती हैं। इसलिए "गर्मी का महीना और अपना स्वास्थ्य" विषय पर जागरूकता अत्यंत आवश्यक है।

गर्मियों में सबसे आम समस्या डिहाइड्रेशन यानी शरीर में पानी की कमी की होती है। अधिक तापमान के कारण शरीर से पसीना ज्यादा निकलता है, जिससे पानी के साथ–साथ आवश्यक लवण भी बाहर निकल जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप थकान, चक्कर आना, सिरदर्द, कमजोरी और कभी–कभी बेहोशी तक की स्थिति बन सकती है। यदि यह स्थिति गंभीर हो जाए, तो लू लगना (हीट स्ट्रोक) जैसी खतरनाक समस्या उत्पन्न हो सकती है, जो जानलेवा भी हो सकती है। इसलिए दिनभर में पर्याप्त मात्रा में पानी पीना बेहद जरूरी है।

गर्मी के मौसम में खान–पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस समय हल्का, ताजा और सुपाच्य भोजन लेना ही उचित होता है। दही, छाछ, नारियल पानी, नींबू पानी जैसे तरल पदार्थ शरीर को ठंडक प्रदान करते हैं और ऊर्जा भी बनाए रखते हैं। मौसमी फल जैसे तरबूज, खरबूज, आम, खीरा और ककड़ी शरीर में पानी की पूर्ति करते हैं और पोषण भी देते हैं। इसके विपरीत, तले–भुने, मसालेदार और अधिक तेल वाले भोजन से बचना चाहिए, क्योंकि ये पाचन तंत्र को प्रभावित करते हैं और शरीर में गर्मी बढ़ाते हैं।

धूप से बचाव भी उतना ही महत्वपूर्ण है। दोपहर के समय, विशेषकर 12 बजे से 3 बजे के बीच, सूर्य की किरणें सबसे अधिक तीव्र होती हैं। इस समय बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना अनिवार्य हो, तो सिर को ढककर रखें, छाता या टोपी का उपयोग करें और हल्के रंग के सूती कपड़े पहनें। इससे शरीर को ठंडक मिलती है और पसीना भी कम आता है। इसके साथ ही, त्वचा को सूर्य की हानिकारक किरणों से बचाने के लिए सनस्क्रीन का उपयोग करना भी लाभकारी होता है।

गर्मी में स्वच्छता बनाए रखना भी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। अधिक पसीना आने के कारण त्वचा पर बैक्टीरिया और फंगस पनप सकते हैं, जिससे घमौरियाँ, खुजली और अन्य त्वचा रोग हो सकते हैं। इसलिए रोजाना स्नान करना, साफ और सूखे कपड़े पहनना तथा शरीर को स्वच्छ रखना चाहिए। साथ ही, बाहर के खुले और अस्वच्छ भोजन से बचना चाहिए, क्योंकि गर्मी में खाद्य पदार्थ जल्दी खराब हो जाते हैं और फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ जाता है।

अंत में, पर्याप्त आराम और नियमित दिनचर्या भी स्वस्थ रहने में सहायक होती है। गर्मी में शरीर जल्दी थक जाता है, इसलिए पर्याप्त नींद लेना और अत्यधिक शारीरिक श्रम से बचना चाहिए। सुबह या शाम के समय हल्का व्यायाम, योग या टहलना शरीर को सक्रिय और मन को शांत रखता है।

इस प्रकार, यदि हम थोड़ी सी सावधानी और सजगता बरतें, तो गर्मी के इस कठिन मौसम में भी अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित और संतुलित रख सकते हैं। स्वास्थ्य ही जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है, और इसकी रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है।

गुरु के हाथों सौंप दी थी जीवन की डोर

बिहार गायत्री परिवार के संस्थापक सदस्यों में एक मधेश्वर प्रसाद सिंह 25 मार्च को ब्रह्मलीन हुए। पटना में रहते हुए अपने नियमित दिनचर्या और श्रद्धेय गुरु आचार्य श्रीराम शर्मा पर अटूट निष्ठा के कारण शतायु होकर इस नश्वर संसार से विदा हुए। इनके बारे में पटना के एक समाचारपत्र ने उनका साक्षात्कार प्रकाशित किया था। इस साक्षात्कार का शीर्षक था, 'उम्र 93, न बीपी, न शुगर'।

परम आदरणीय मधेश्वर बाबू जी का जन्म जहानाबाद जिले के मोदनगंज प्रखंड स्थित चंधरिया गांव में 2 जनवरी, 1924 ई. को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव से ही की। उच्च शिक्षा पटना साइंस कॉलेज से पूरी की। 1941 से 1949 ई. तक आपने यहां पढ़ाई की। एम.एससी. (गणित) में आपको पटना विश्वविद्यालय की ओर से स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था। 1949 ई. में आपका चयन बिहार प्रशासनिक सेवा के लिए हुआ। उसके बाद अपने कई स्थानों पर अपनी सेवाएं दी। आप भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में 1972 ई. में प्रोन्नत हुए। 31 जनवरी, 1982 को सेवानिवृत हुए।

गायत्री परिवार से आपका परिचय जे पी आंदोलन के समय ही हो गया था। आपको परम पूज्य गुरुदेव का सानिध्य 1975 में प्राप्त हुआ। उस समय से आपने अपने को गायत्री परिवार के कार्य के लिए समर्पित कर दिया। दीप यज्ञ, गायत्री यज्ञ, सदसाहित्य विस्तार के लिए स्वयं घूम–घूम कर गाँव–गाँव में संपन्न करने का कार्य करते थे। पटना शक्तिपीठ के नींव में भी आपकी अहम भूमिका रही। पटना शक्तिपीठ की नींव के लिए गुरुदेव ने तीन व्यक्तियों को संकल्प दिलवाया था, उनमें से एक महत्वपूर्ण व्यक्ति आप भी थे। वंदनीया माताजी का आगमन अश्वमेध यज्ञ (1994) के समय पटना में हुआ था उस कार्यक्रम में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। अति वृद्ध होने के कारण गत दिनों कार्यक्रम तो आप नहीं करवा पाते थे लेकिन गायत्री परिवार के सभी कार्यक्रमों में अशक्त होने के बावजूद भी पहुंच जाया करते थे। 25 मार्च को अपने जीवनकाल का 102 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण कर के संध्या समय स्थूल काया को त्याग कर गुरुदेव की सत्ता में विलीन हो गये।

नहीं रहे जितेंद्र जी

सेवा भारती के प्रांतीय प्रशिक्षण प्रमुख जितेंद्र जी नहीं रहे। 56 वर्षीय जितेंद्र जी की मौत हृदयाघात से 30 मार्च, 2026 को हो गई। मूलतः बक्सर के चौगाईं प्रखंड के रहनेवाले जितेंद्र जी लंबे समय से सपरिवार पटना में रह रहे थे। पटना विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातकोत्तर एवं पटना लॉ कॉलेज से कानून की डिग्री ली थी। स्वतंत्र ढंग से रहने के कारण कभी कोई नौकरी नहीं की। बाल्यकाल के स्वयंसेवक जितेंद्र जी ने संघ के कई दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। आप शारीरिक और घोष के तज्ञ थे। नालन्दा जिला के राजगीर और हिलसा में काफी समय तक संघ के विस्तारक रहे। पटना के पटना साहिब उपभाग के भाग कार्यवाह भी रहे। पटना सिटी के महावीर मंदिर में 9 अप्रैल को आयोजित स्मृति सभा में उन्हें आदर्श स्वयंसेवक बताया गया।

कभी 2–4 हजार मांगने पड़ते थे, आज है 200 करोड़ का टर्नओवर

सीतामढ़ी के एक युवा ने अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प से वह मुकाम हासिल किया है, जो आज के युवाओं के लिए एक मिसाल है। जहां एक तरफ लोग सरकारी नौकरी के पीछे भागते हैं, वहीं इस शख्स ने शून्य से शिखर तक का सफर तय कर खुद का साम्राज्य खड़ा किया है। यह कहानी है एक ऐसे राइस मिल व्यवसायी की, जिसने कभी रू.2,000 और रू.5,000 उधार लेकर अपने व्यवसाय की नींव रखी थी और आज करोड़ों का टर्नओवर संभाल रहे हैं। ये युवा व्यवसायी हैं सीतामढ़ी जिले के रहनेवाले संजय कुमार।

सिविल सर्विसेज छोड़ चुना उद्यमिता का रास्ता

व्यवसायी संजय कुमार का परिवार चाहता था कि वे सिविल सर्विसेज में जाकर एक प्रशासनिक अधिकारी बनें। घर का पूरा माहौल उन्हें पढ़ाई और सरकारी नौकरी की ओर धकेल रहा था, लेकिन उनके मन में कुछ अलग करने की इच्छा थी। वे अपने माता–पिता के करीब रहकर समाज और क्षेत्र के विकास में योगदान देना चाहते थे। इसी सोच के साथ उन्होंने राइस मिल उद्योग को चुना। शुरुआत में परिवार ने भी ज्यादा समर्थन नहीं दिया लेकिन उनकी जिद ने आज उन्हें एक सफल उद्यमी बना दिया है।

मार्जिन मनी के लिए रिश्तेदारों से लिया उधार

संजय को व्यवसाय शुरू करने के लिए सबसे बड़ी चुनौती पूंजी की थी। संजय बताते हैं कि उनके पास शुरुआती 'मार्जिन मनी' जमा करने तक के पैसे नहीं थे। उन्होंने हार नहीं मानी और अपने दोस्तों व रिश्तेदारों से 2,000 रुपये और 5,000 रुपये जैसी छोटी–छोटी रकम जोड़कर पूंजी इकट्ठा की। उनके माता–पिता ने जानबूझकर आर्थिक मदद नहीं की, क्योंकि वे चाहते थे कि उनका बेटा अपने बलबूते खड़ा होकर संघर्ष की भट्टी में तपकर कुंदन बने। आज वही संघर्ष उनकी मजबूती का आधार बना है।

शुरुआती दिनों में उनके पास काम संभालने के लिए मुंशी या स्टाफ नहीं था। वे खुद अपनी पुरानी 'डिस्कवर' बाइक पर एक भारी बैग टांगे, जिसमें

ऑफिस के सारे कागजात होते थे, दिन भर में 40–50 किलोमीटर का चक्कर लगाते थे। सीतामढ़ी की सड़कों पर सुबह से लेकर रात के 12 बजे तक दौड़ना उनकी दिनचर्या थी। मेहनत का नतीजा यह है कि आज उनकी कंपनी का सर्विस टर्नओवर 100 से 200 करोड़ के बीच पहुंच गया है, जो मुख्य रूप से सरकारी धान की मिलिंग और चावल आपूर्ति से जुड़ा है।

जब उन्होंने मिल शुरू की थी, तब केवल 10 से 15 मजदूर काम करते थे। आज उनके पास 65 से 70 लोगों का स्थायी स्टाफ है। इनमें 40 लोग बोरा लोडिंग और अनलोडिंग (पलदार) का काम करते हैं, जबकि बाकी मिलिंग, बॉयलर और ड्रायर की विशेष टीमों का हिस्सा हैं। एक समय खुद मुंशी का काम करने वाले इस संजय ने आज दर्जनों परिवारों को प्रत्यक्ष रोजगार देकर उनके घरों का चूल्हा जलाने में मदद की है।

संजय का ज्यादातर काम सरकार के साथ है। सरकार उन्हें धान उपलब्ध कराती है और वे तैयार चावल वापस देते हैं। इस प्रक्रिया में घोटाले की कोई गुंजाइश नहीं रहती क्योंकि जितना धान मिलता है, उसी अनुपात में चावल देना होता है। हालांकि सरकारी मिलिंग चार्ज मात्र 10 रुपये प्रति क्विंटल मिलता है, लेकिन बड़े पैमाने पर काम होने के कारण यह एक सफल बिजनेस मॉडल बन गया है। वे आज करोड़ों रुपये के सरकारी धान को प्रोसेस कर अपनी क्षमता साबित कर रहे हैं।

(साभारः न्यूज 18)

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

प्रमुख जन संगोष्ठी, पटना महानगर

आमंत्रण

आद्य पत्रकार देवर्षि नारद स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम

मुख्य वक्ता– (पद्मश्री) राम बहादुर राय
दिनांक – 9 मई, 2026 (शनिवार)
समय – अपराह्न (दोपहर) 2:30 बजे से
स्थान – पटना संग्रहालय, बुद्ध मार्ग, पटना।

डाक टिकट

पता